Pathshala
COLOUR BOOK

Part 3

Published by :
Dharmodaya Pariksha Board
Sagar (M.P.)

यह एक धार्मिक पुस्तक है, इसकी विनय का ध्यान रखें ।

- कृति : पाठशाला कलर बुक भाग-3
- प्रस्तुति : ब्र. डॉ. भरत जैन
- सर्वाधिकार : प्रकाशकाधीन
- संस्करण : प्रथम, मार्च, 2013
- आवृत्ति : 2200
- मूल्य : 30/-
- प्राप्ति स्थान : धर्मोदय परीक्षा बोर्ड
  जैन मंदिर के पास
  बाहुबली कॉलोनी, सागर (म. प्र.)
  मो. नं. 094249-51771
  Email - dharmodayat@ gmail.com
- मुद्रक : विकास आफसेट, भोपाल

दो शब्द

पाठशाला कलर बुक भाग-3 आपके हाथों में देते हुए बहुत हर्ष हो रहा है। इसमें रंग भरने के साथ तीर्थंकरों से सम्बन्धित कुछ जानकारियाँ भी दी गईं हैं।

इसमें प्रसिद्ध तीर्थंकर प्रतिमाओं के साथ में परिचयात्मक पद्य दिया गया है तथा भगवान के शरीर का रंग, ऊँचाई, आयु, जन्म स्थान एवं मोक्ष स्थली को भी दर्शाया गया है।

तीर्थंकर भगवान की स्तुति परक दोहा साथ में प्रत्येक भगवान का जाप्य मंत्र भी दिया गया है, इसे हमें 9, 27 अथवा 108 बार अवश्य पढ़ना है, इसे नियमित पढ़ने से हमारा मन एकाग्र होगा तभी हमारी बुद्धि का विकास संभव है और स्कूल की पढ़ाई में अच्छे नंबर आयेंगे। तीर्थंकरों के चिह्न हमारे जीवन को अच्छा बनाने का संदेश देते हैं।

इस कलर-बुक को बनाने में जहाँ-जहाँ से सामग्री का चयन किया है, उन्हें प्रत्यक्ष-परोक्ष कोटिशः धन्यवाद ज्ञापित करते हैं।

ब्र. डॉ. भरत जैन

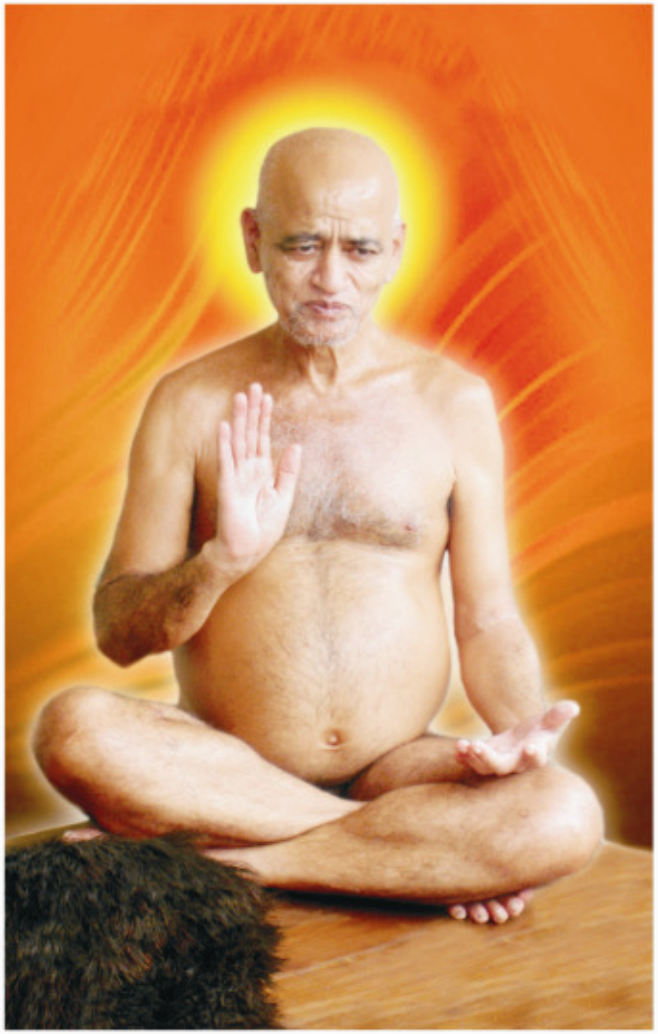

समर्पण

परम पूज्य प्रातः स्मरणीय विश्व वंदनीय
आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महाराज
के कर कमलों में सादर समर्पित

1

श्री आदिनाथ भगवान, बड़ेबाबा, कुण्डलपुर, दमोह

सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर न्यारा, विद्या गुरु का जहाँ सहारा।
श्रीधर केवलि मोक्ष पधारे, मंदिर शोभे न्यारे न्यारे॥

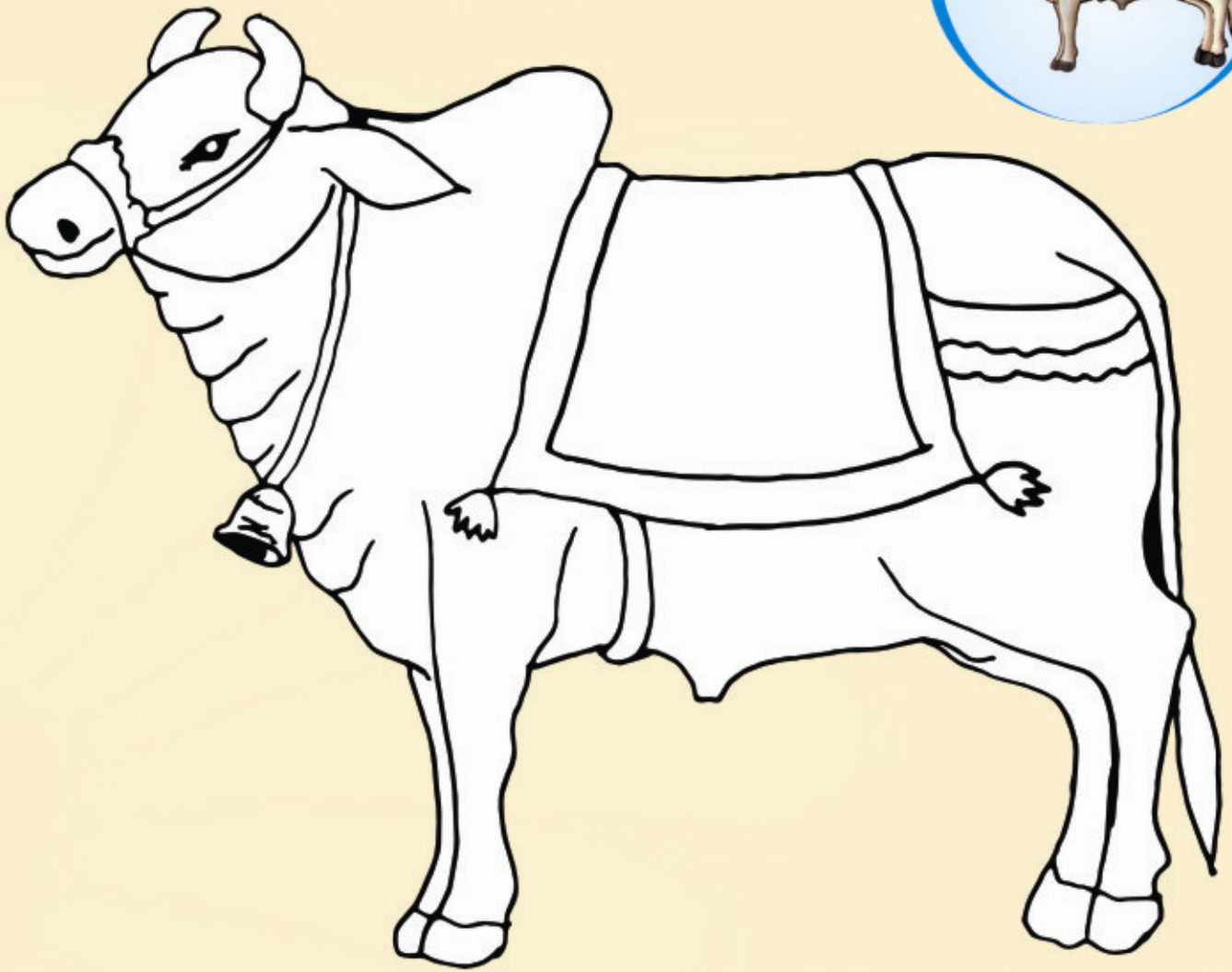

चिह्न - वृषभ
रंग - स्वर्ण
ऊँचाई - 500 धनुष
आयु - 84 लाख पूर्व वर्ष
जन्म - श्री अयोध्याजी
मोक्ष - श्री कैलाशगिरिजी

प्रथम देव जो पहले आए
आदिनाथ मेरे कहलाए।
सम्यक् ज्ञान मुझे कृपया दो,
मैं पाऊँ सो आत्म दशा को ॥

॥ ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः ॥

मैं वृषभ हूँ। यदि आप वृष अर्थात् धर्म को अपने हृदय में धारण करोगे तो वृषभनाथ जिनेन्द्र के समान अपने जीवन में केवलज्ञान प्राप्त करोगे।

2

श्री अजितनाथजी भगवान, जैन चौरासी, मथुरा (उ. प्र.)

अजितनाथ वदूँ अभिरामी, जहाँ विराजे जम्बूस्वामी।
ऋषिवर भी यहाँ विराजे, जैन चौरासी मथुरा साजे॥

चिह्न - हाथी
रंग - स्वर्ण
ऊँचाई - 450 धनुष
आयु - 72 लाख पूर्व वर्ष
जन्म - श्री अयोध्याजी
मोक्ष - श्री सम्मेदशिखरजी

अजितनाथ हैं दूजे जिनवर,
अच्छे पिता मित्र हो प्रभुवर।
कर्मराज लूटे वैभव मम,
मम परतन्त्र कथा बदलो तुम॥

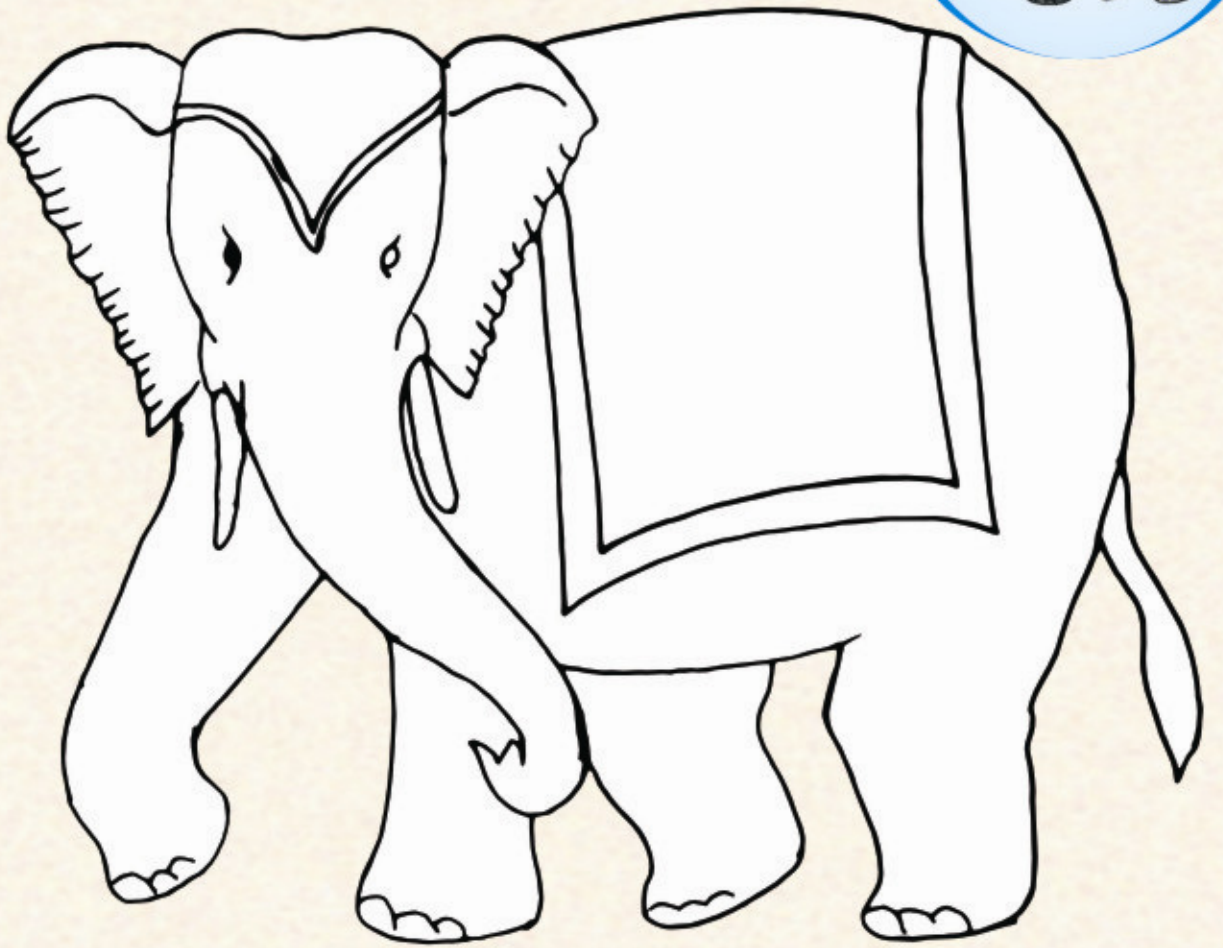

मैं हाथी हूँ। मैं बहुत बलवान हूँ। भगवान अजितनाथ के चरणों का आश्रय पाकर भक्त मेरे समान ऐसे बलशाली होते हैं कि वे पाप कर्म रूपी जंगल को उखाड़ फेंकते हैं।

॥ ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः॥

3

श्री संभवनाथ भगवान, श्रावस्ती (उ. प्र.)

सिद्धक्षेत्र श्रावस्ती न्यारा, संभव जिन को मिला किनारा।
मृग-नागध्वज मोक्ष पधारे, हम सब उनको सदा पुकारे॥

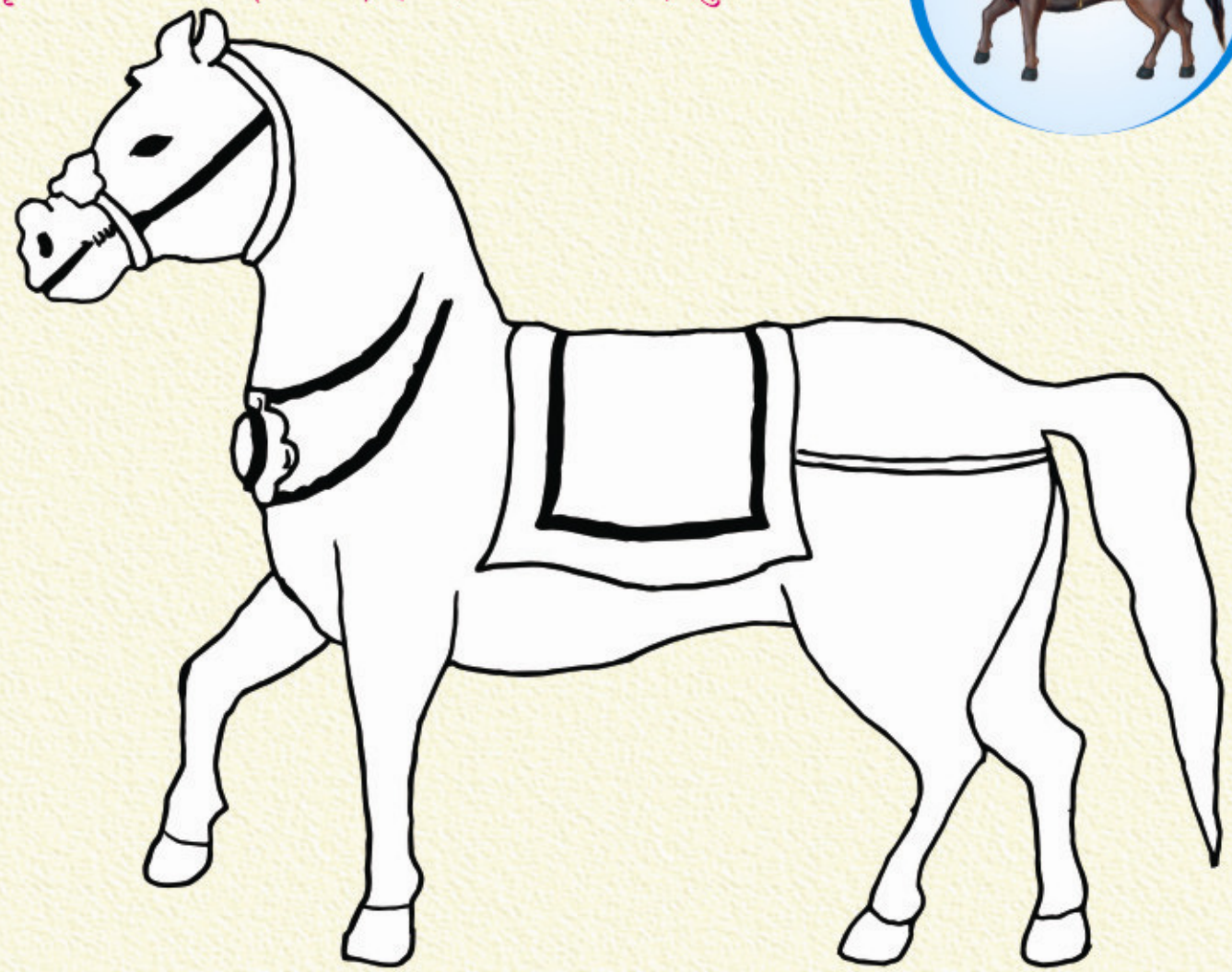

चिह्न - घोड़ा
रंग - स्वर्ण
ऊँचाई - 400 धनुष
आयु - 60 लाख पूर्व वर्ष
जन्म - श्री श्रावस्तीजी
मोक्ष - श्री सम्मेदशिखरजी

कर्म बन्ध मजबूत बहुत है,
सिद्ध हो रहे कर्म गलत हैं।
शंभव स्वामी महा आप हो,
खोलो मेरे मुक्ति द्वार को॥

मैं घोड़ा हूँ। यदि मेरी लगाम लेकर सवारी करोगे तो गंतव्य तक पहुँच जाओगे। इसी तरह संयम रूपी लगाम लगाओगे तो मोक्ष रूपी गंतव्य तक पहुँच जाओगे।

॥ ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः ॥

4

श्री अभिनंदननाथ भगवान, क्षेत्रपाल, ललितपुर

नगर ललितपुर जहाँ रहा है, अभिनंदनजी पूज्य वहाँ है।
क्षेत्रपाल में शोभा पाते, दर्शन से सब पाप नशाते॥

चिह्न - बन्दर
रंग - स्वर्ण
ऊँचाई - 350 धनुष
आयु - 50 लाख पूर्व वर्ष
जन्म - श्री अयोध्याजी
मोक्ष - श्री सम्मेदशिखरजी

जगपथ टेड़े - मेड़े सारे,
बिना रुके नित दौड़ो प्यारे।
मुझे प्राप्त अपने को करना,
मदद नाथ अभिनन्दन करना॥

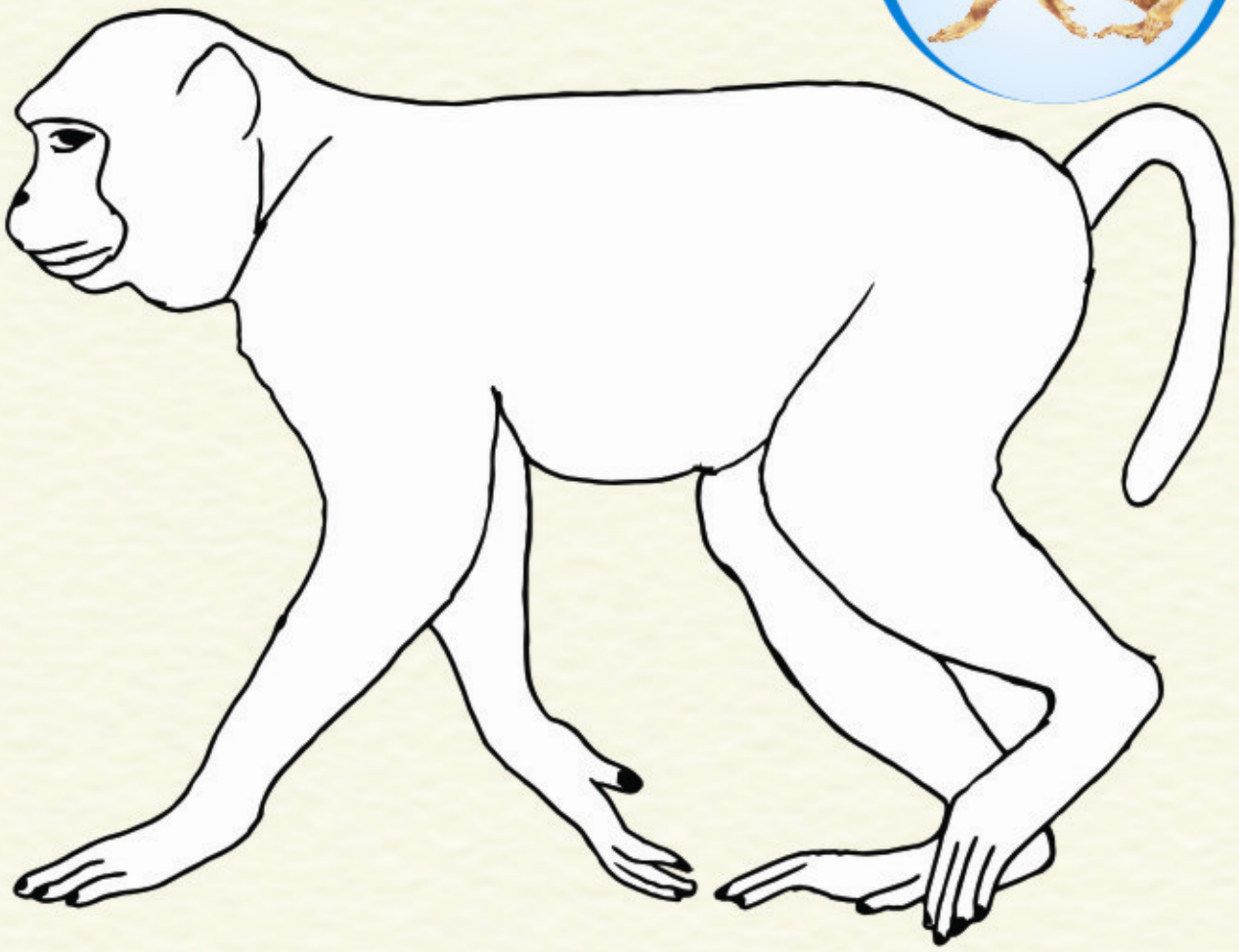

मैं बन्दर हूँ। हे आत्मन्! भले ही मैं चंचल हूँ। पर मुझसे भी अति चंचल तुम्हारा मन है, यदि इस मन को भगवान अभिनंदननाथ की स्तुति का आश्रय दोगे तो मोक्ष रूपी फल प्राप्त हो जायेगा।

॥ ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमो नमः ॥

श्री सुमतिनाथ भगवान, रैवासा, सीकर (राज.)

सुमतिनाथ भगवान हमारे, रैवासा में अतिशय धारे।
भव्योदय वह क्षेत्र कहा है, आप सरीखा देव कहाँ है॥

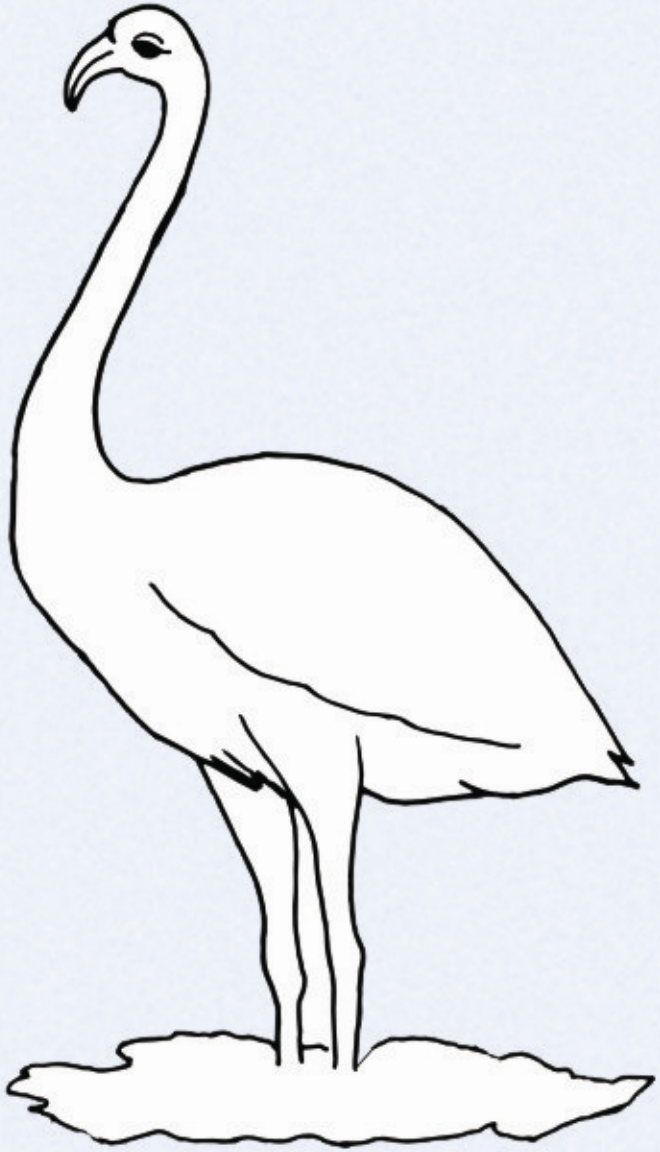

चिह्न - चकवा
रंग - स्वर्ण
ऊँचाई - 300 धनुष
आयु - 40 लाख पूर्व वर्ष
जन्म - श्री अयोध्याजी
मोक्ष - श्री सम्मेदशिखरजी

सुमतिनाथ का ज्ञान शुद्ध है,
ज्यों अच्छा दर्पण विशुद्ध है।
गंदा मम मुख दिखा रहा वो,
इसे आप बेदाग बना दो॥

मैं चकवा हूँ। मैं कभी पिंजरे में नहीं रहता, आजाद निर्द्वन्द भ्रमण करता हूँ। हे मानव! आप भी तन पिंजरे से निकल कर निर्द्वन्द भ्रमण करने के लिए सुमतिनाथ भगवान की शरण प्राप्त करो।

॥ ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः॥

6

श्री पद्मप्रभ भगवान,कौशाम्बी (उ. प्र.)

कौशाम्बी नगरी में आकर, जन्म लिया था राजा के घर।
पद्मप्रभ की भक्ति करेंगे, मिथ्यामत से नित्य डरेंगे॥

चिह्न - लाल कमल
रंग - लाल
ऊँचाई - 250 धनुष
आयु - 30 लाख पूर्व वर्ष
जन्म - श्री कौशाम्बीजी
मोक्ष - श्री सम्मेदशिखरजी

पद्मप्रभू जी तुमने पाया,
मोक्षमहल शुभ धाम कहाया।
मेरा शुभ सपना जानो तुम,
कहो! पूर्ण क्यों ना करते तुम?॥

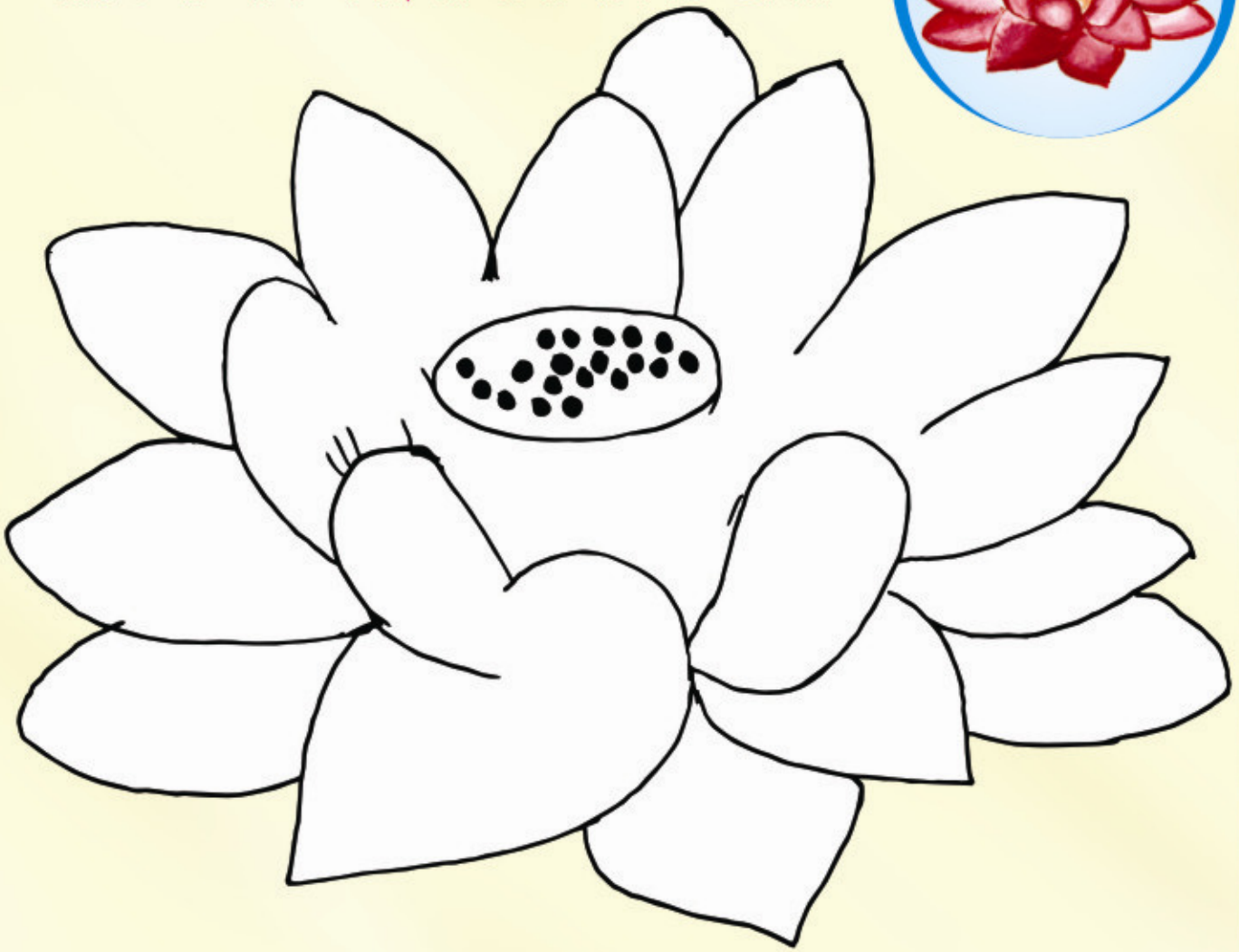

॥ ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमो नमः॥

मैं लाल कमल हूँ। जिस प्रकार मैं सूरज की किरणों को पाकर खिल जाता हूँ, उसी प्रकार आपका जीवन भी पद्मप्रभ भगवान की भक्ति की किरणों को पाकर खिल जायेगा।

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान, विद्यापुरम्, गंजबासौदा

सुपार्श्व स्वामी शरण हमारे, दीन दुखी के आप सहारे।
नगर बासौदा महिमा भारी, शीश नमावे हे सुखकारी॥

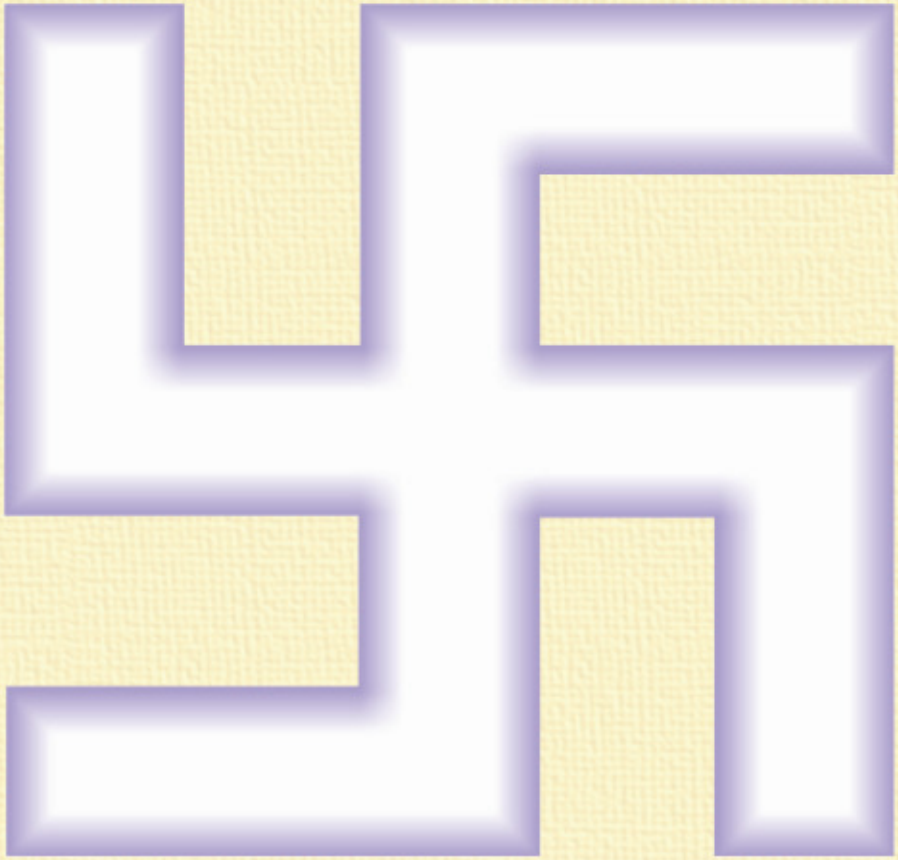

चिह्न - स्वस्तिक
रंग - नीला
ऊँचाई - 200 धनुष
आयु - 20 लाख पूर्व वर्ष
जन्म - श्री वाराणसीजी
मोक्ष - श्री सम्मेदशिखरजी

सुपार्श्व प्रभु मंगल यश पाये,
जन्म मरण जंजीर नशाये।
प्रभु मेरे ये चक्र नशाओ,
मेरे मन मन्दिर में आओ॥

॥ ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः॥

मैं स्वस्तिक हूँ। मंगलकारी हूँ। श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की शरण पाकर आपका जीवन भी चारों गतियों के दुःखों से छूटकर मंगलकारी हो जायेगा।

8

श्री चन्द्रप्रभ भगवान, गुणायतन, सम्मेदशिखर

सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर में, शिव पाया है तीर्थंकर ने।
चन्द्रप्रभु की छवि अति प्यारी, लगती सबसे न्यारी न्यारी॥

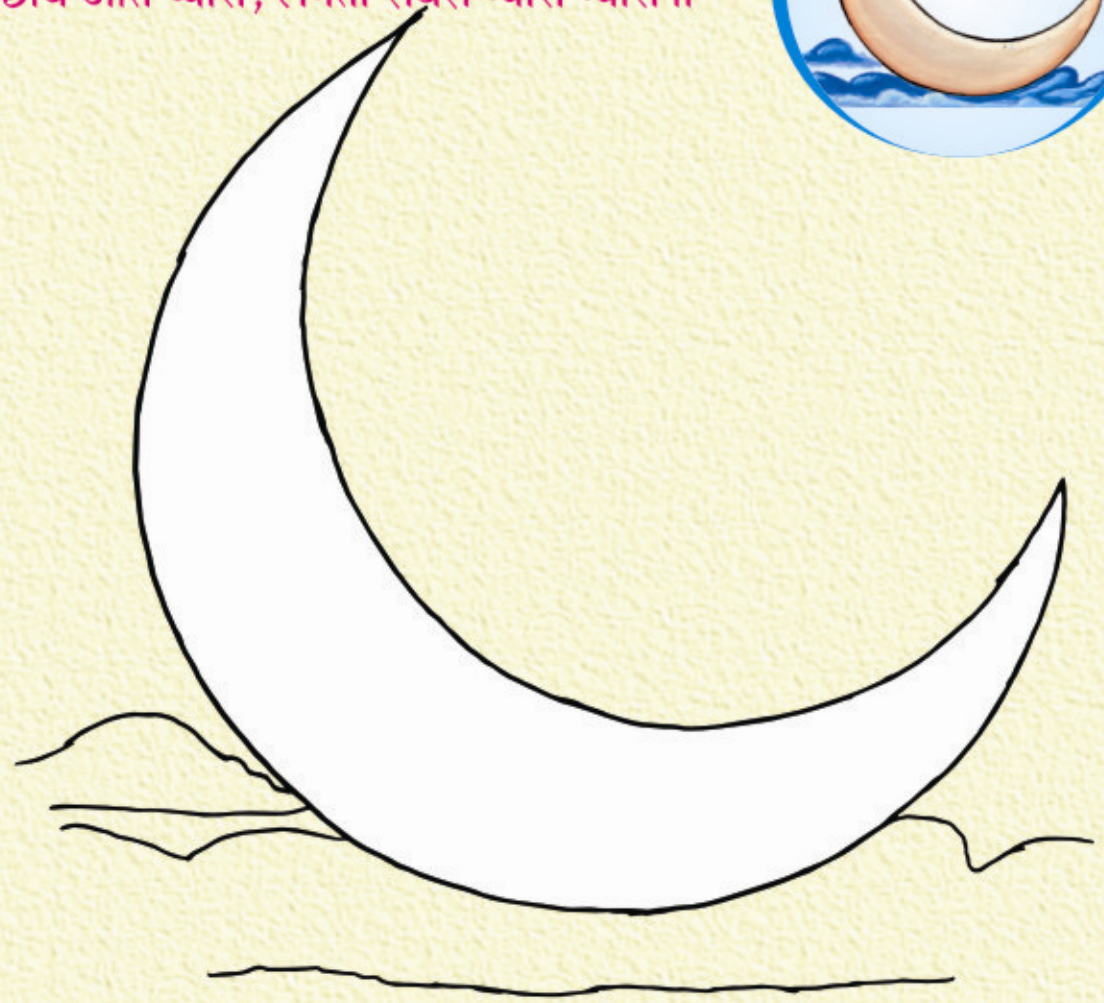

चिह्न - अर्द्धचन्द्र
रंग - श्वेत
ऊँचाई - 150 धनुष
आयु - 10 लाख पूर्व वर्ष
जन्म - श्री चन्द्रपुरजी
मोक्ष - श्री सम्मेदशिखरजी

सबके अतीत काले होते,
आत्म मूल्य उन्हें ज्ञात न होते।
आत्म चन्द्रप्रभु चमकित पाये,
एक किरण से सब दिख जाये॥

॥ ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमो नमः ॥

मैं अर्द्धचन्द्र हूँ। जिस प्रकार मैं शुक्ल पक्ष में बढ़ता हूँ और कृष्ण पक्ष में घटता हूँ उसी तरह धर्म के सहारे जीव उत्थान करता है, अधर्म के सहारे पतन करता है। अतः ज्ञान का प्रकाश पाने के लिए चन्द्रप्रभ भगवान की शरण ही श्रेष्ठ है।

9

श्री पुष्पदन्त (सुविधि) भगवान, काकन्दी (उ. प्र.)

काकन्दी में जन्म सुपाया, नाम आपका हमें सुहाया।
मोक्षमार्ग की विधि बतलाई, सुविधिनाथ ही शरण सहाई॥

चिह्न - मगर
रंग - श्वेत
ऊँचाई - 100 धनुष
आयु - 2 लाख पूर्व वर्ष
जन्म - श्री काकन्दीजी
मोक्ष - श्री सम्मेदशिखरजी

सुविधिनाथ अच्छे गुण देते,
मुक्ति पंक्ति में गुणधर होते।
शुद्ध साफ गुण नित्य नये जो,
ओ दाता कुछ हमको दे दो॥

मैं मगर हूँ। भयंकर विकराल हूँ, लेकिन मुझसे भी विकराल मोह है। जो संसार समुद्र से पार होने नहीं देता इसलिए पुष्पदन्त भगवान की शरण में आकर इस मोह को दूर करने का प्रयास करो।

॥ ॐ ह्रीं श्री सुविधिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः॥

श्री शीतलनाथ भगवान, सांची (म. प्र.)

शीतल जिन का शासन शीतल, तुमसे शोभित सारा भूतल।
कल्पवृक्ष है चिह्न आपका, दर्शन से हो नाश पाप का॥

चिह्न - कल्पवृक्ष
रंग - स्वर्ण
ऊँचाई - 90 धनुष
आयु - 1 लाख पूर्व वर्ष
जन्म - श्री भद्दिलपुरजी
मोक्ष - श्री सम्मेदशिखरजी

सभी तरफ ही आग-आग है,
और यहाँ सर्वोच्च ताप है।
तिनके जैसा मेरा जीवन,
मुझे बचाओ शीतल भगवन॥

॥ ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः ॥

मैं कल्पवृक्ष हूँ। मैं मनवांछित फल प्रदान करता हूँ। यदि शीतलनाथ भगवान की शरण में आओगे तो आपको जिनधर्म रूपी कल्पवृक्ष से मोक्ष सुख रूपी फल अवश्य प्राप्त होगा।

11

श्री श्रेयांसनाथ भगवान, सिंहपुरी (सारनाथ)

सिंहपुरी में श्रेयनाथ ये, देते सबका नित्य साथ ये।
चारों कल्याणक इह पाये, हम भी पूजा करने आये॥

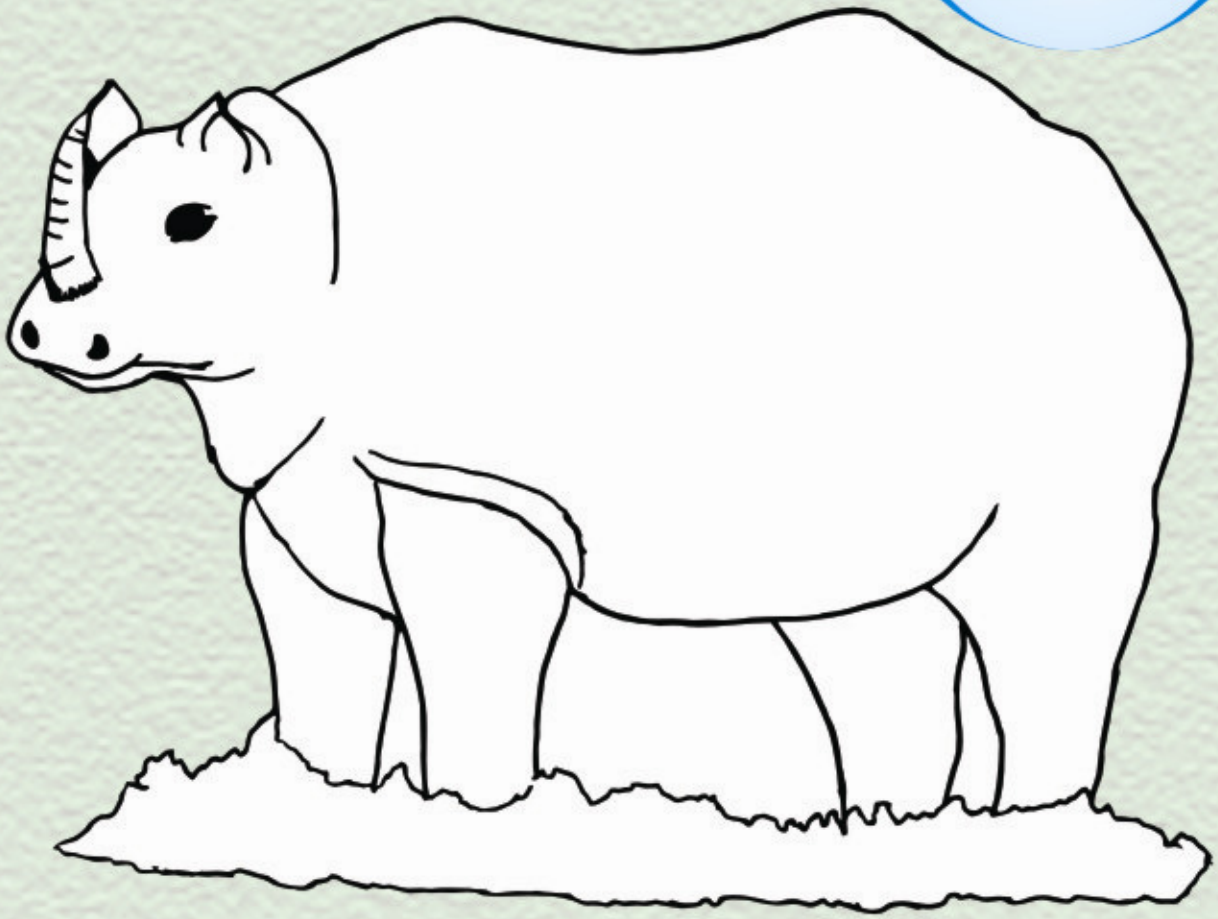

चिह्न - गैंडा
रंग - स्वर्ण
ऊँचाई - 80 धनुष
आयु - 84 लाख वर्ष
जन्म - श्री सिंहपुरीजी
मोक्ष - श्री सम्मेदशिखरजी

दुख कष्टों से सहित जगत पद,
बहुत-बहुत पर ना निश्चित पद।
जो त्यागे ये जग पद सारे,
श्रेयांशनाथ पालक प्यारे॥

मैं गैंडा हूँ। अपने श्रेय को पाने के लिए तन मन लगा देता हूँ। हे आत्मन्! श्रेयस सुख पाने के लिए श्रेयांसनाथ भगवान के चरणों में अपना तन मन सब कुछ समर्पित करो।

॥ ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः ॥

12

श्री वासुपूज्य भगवान, चम्पापुर (बिहार)

सिद्धक्षेत्र अति सुंदर प्यारा, वासुपूज्य का धाम सु न्यारा।
पाँच कल्याणक गौरव पाया, चम्पापुर में हर्ष मनाया॥

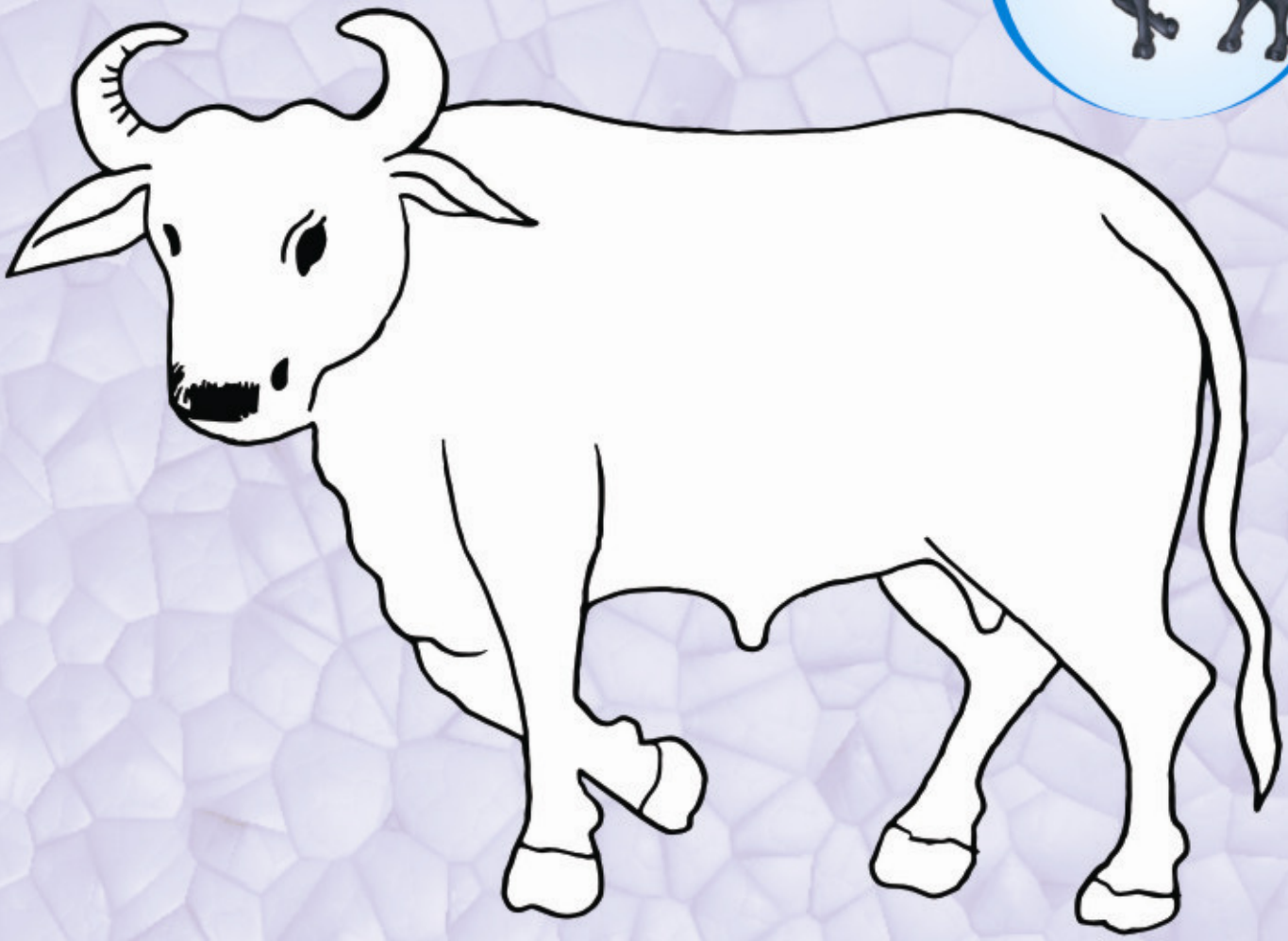

चिह्न - भैंसा
रंग - लाल
ऊँचाई - 70 धनुष
आयु - 72 लाख वर्ष
जन्म - श्री चम्पापुरजी
मोक्ष - श्री चम्पापुरजी

हरा मनोहर बाह्य रूप हैं,
अंदर गंदा बुरा रूप है।
श्रेष्ठ न दूजा आत्म रूप सम,
वासुपूज्य प्रभु किये परीक्षण॥

॥ ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमो नमः ॥

मैं भैंसा हूँ। लोक में प्रचलित है कि सबको परास्त करने वाले यम (काल) की मैं सवारी हूँ परन्तु हे आत्मन्! वासुपूज्य भगवान की शरण पाकर उस काल को भी परास्त कर मोक्ष सुख पा सकते हो।

13

चिह्न - शूकर

रंग - स्वर्ण

ऊँचाई - 60 धनुष

आयु - 60 लाख वर्ष

जन्म - श्री कम्पिल जी

मोक्ष - श्री सम्मेदशिखरजी

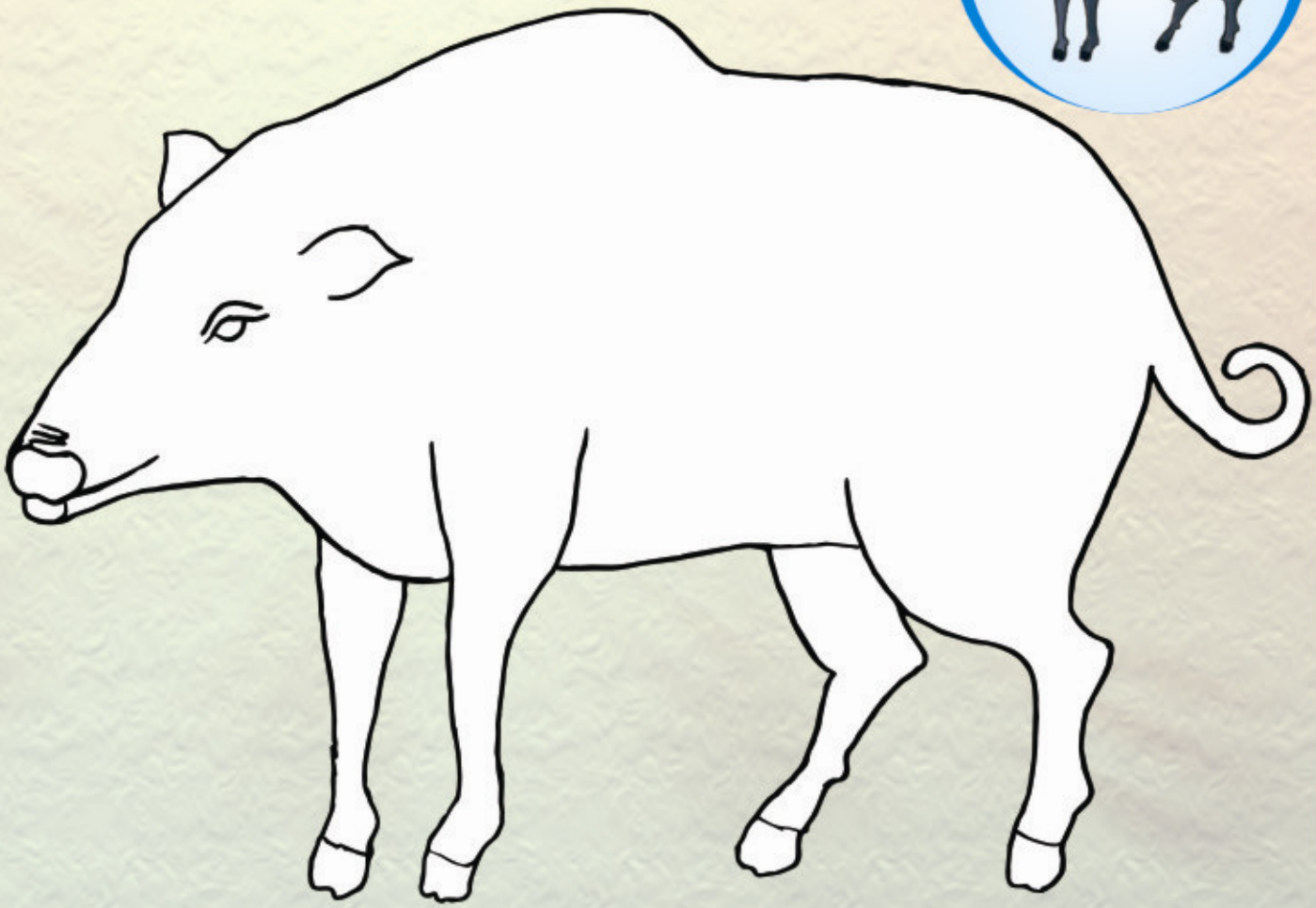

जग आकर्षण बहुत प्रकारी,
करे कोई न मदद हमारी।
कार्यभार व छोटा जीवन,
विमलनाथ प्रभु करो मदद तुम॥

॥ ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः ॥

श्री विमलनाथ भगवान, कम्पिलजी (उ.प्र.)

विमलनाथ का सुंदर काया, जन्म कम्पिल नगरी पाया।
चार कल्याणक हुए यहाँ पर, बिम्ब सुशोभित रहा जहाँ पर॥

मैं शूकर हूँ। मेरी जाति के जीव ने अभय दान देकर मुनि रक्षा के प्रभाव से अपने विमल परिणामों के बल पर संसार का अंत कर लिया। यदि आपको भी संसार का अंत करना है तो विमलनाथ भगवान की शरण को प्राप्त करो।

14

श्री अनंतनाथ भगवान, नैनागिर (म. प्र)

अनंत गुण की खान कहाये, अनंत जिन भगवान बताये।
नैनागिर में अतिशय पाया, सुनकर मैंने शीश नमाया॥

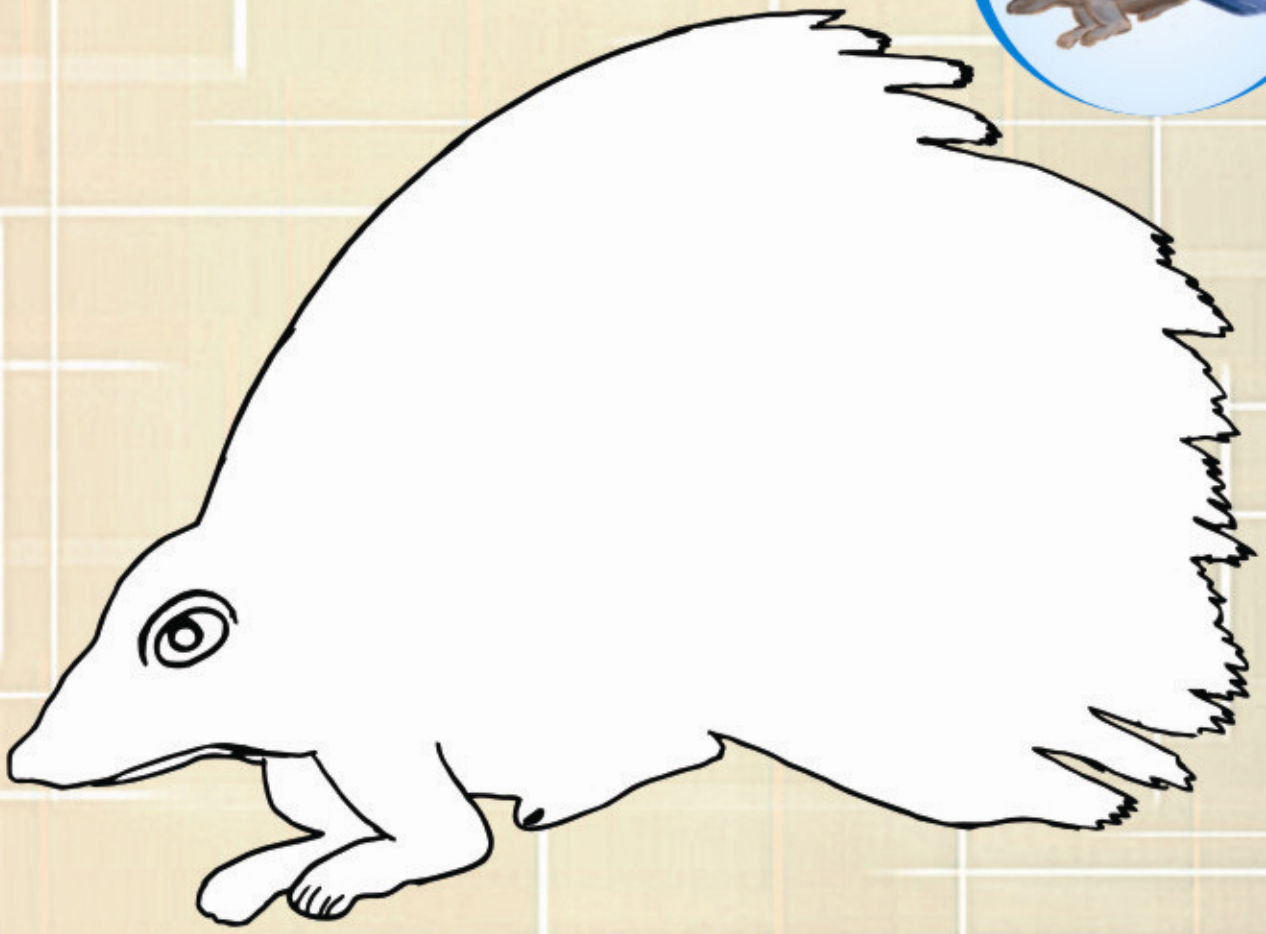

चिह्न	-	सेही
रंग	-	स्वर्ण
ऊँचाई	-	50 धनुष
आयु	-	30 लाख वर्ष
जन्म	-	श्री अयोध्याजी
मोक्ष	-	श्री सम्मेदशिखरजी

सत्य झूठ क्या कोय ना जाने,
दृष्टिकोण सब अपना जाने।
विश्व-सत्य को जान, दिखाये,
अनन्तनाथ तीर्थंकर भाये॥

॥ ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः ॥

मैं सेही हूँ। जिस प्रकार मैं अपने तीक्ष्ण बालों के द्वारा शत्रुओं से रक्षा स्वयं ही कर लेता हूँ। इसी प्रकार हे प्रज्ञ अपने रत्नत्रय रूपी बाणों द्वारा मिथ्यात्व शत्रुओं से बचते हुए प्रभु अनंतनाथ की शरण में आकर अनंत सुख, ज्ञान आदि गुण प्राप्त करोगे।

श्री धर्मनाथ भगवान, रतनपुरी(उ. प्र.)

धर्म धुरन्धर धर्मनाथ, धर्म वीर हों सबके नाथ।
इस अनाथ को नाथ बना दो, मुक्ति रमा से साथ करा दो॥

चिह्न - वज्र
रंग - स्वर्ण
ऊँचाई - 45 धनुष
आयु - 10 लाख वर्ष
जन्म - श्री रत्नपुरीजी
मोक्ष - श्री सम्मेदशिखरजी

स्वागत!स्वागत! धार्मिक जन का,
धर्मनाथ अच्छे भगवन का।
कर्म शत्रु को तुमने मारा,
ओ दयालु मैं भक्त तुम्हारा॥

मैं वज्रदण्ड हूँ। जिस तरह मैं योद्धाओं को परास्त करने में सहायक हूँ। उसी तरह प्रभु धर्मनाथ की शरण में आकर आप भी कर्म रूपी शत्रु को परास्त करने में समर्थ हो सकते हो।

॥ ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः ॥

16

श्री शान्तिनाथ भगवान, गोयलनगर, इन्दौर

शान्तिनाथ है शान्ति विधाता, हमको शिवसुख मोक्ष प्रदाता।
गोयलनगर इन्दौर विराजित, सबके द्वारा हो आराधित॥

चिह्न - हिरण
रंग - स्वर्ण
ऊँचाई - 40 धनुष
आयु - 1 लाख वर्ष
जन्म - श्री हस्तिनापुरजी
मोक्ष - श्री सम्मेदशिखरजी

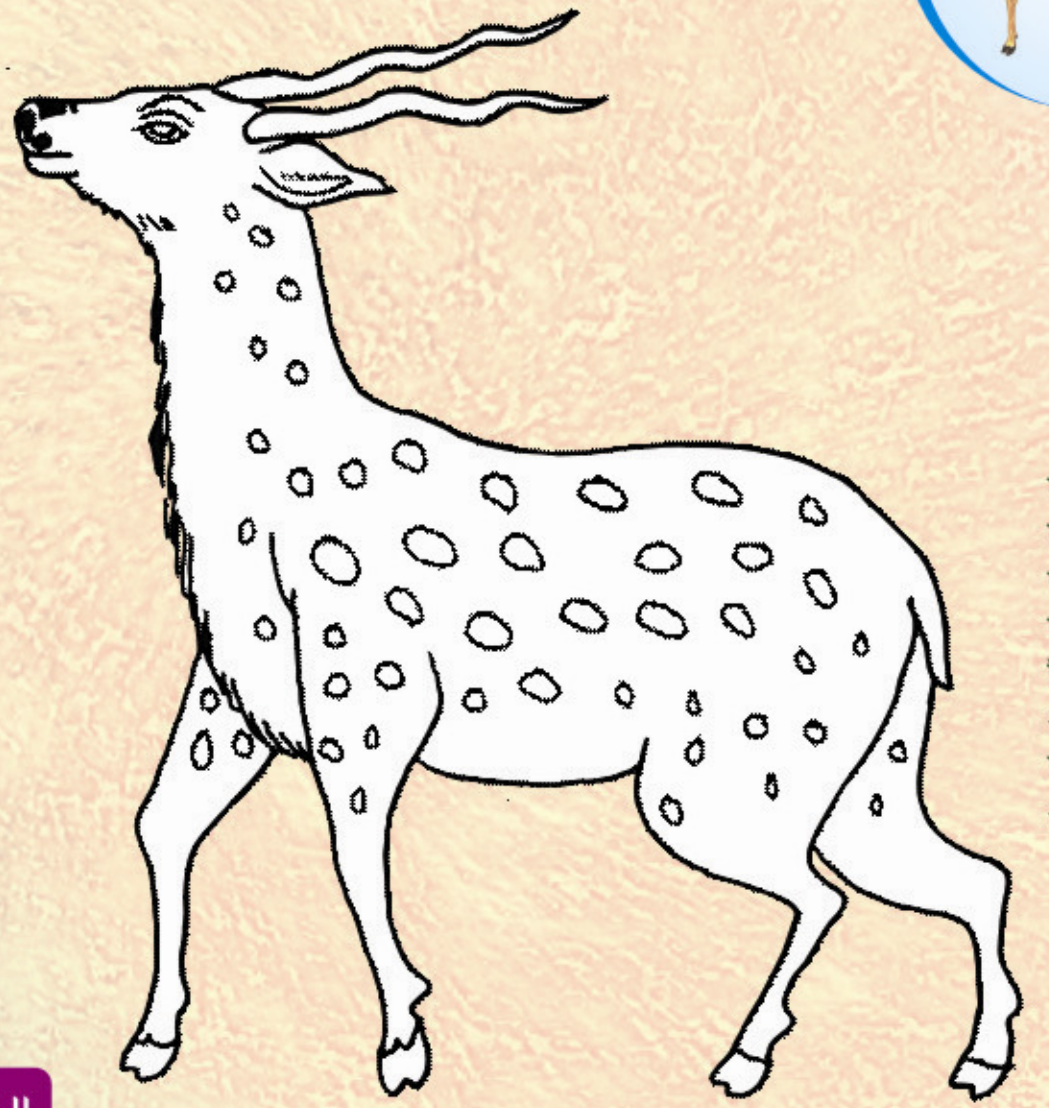

मैं हिरण हूँ। कस्तूरी की सुगंध के लिए मैं बाहर भागता हूँ पर वह सुगंध मेरे अंदर ही है। उसी प्रकार हे आत्मन्! सच्ची शान्ति बाहर नहीं अपने अन्दर ही है।

अशान्त जीवन शान्ति खोजते,
पर ना पाकर भाग्य कोसते।
शान्ति राज्य प्रभु शांति नाथ हो,
शान्ति-भवन का द्वार खोल दो॥

॥ ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः॥

श्री कुन्थुनाथ भगवान, कुसुम्बा (महा.)

सिद्धों की श्रेणी में आते, भव्यों को सद् राह बताते।
कुन्थुनाथ भगवान सुहाते, क्षेत्र कुसुम्बा शोभा पाते॥

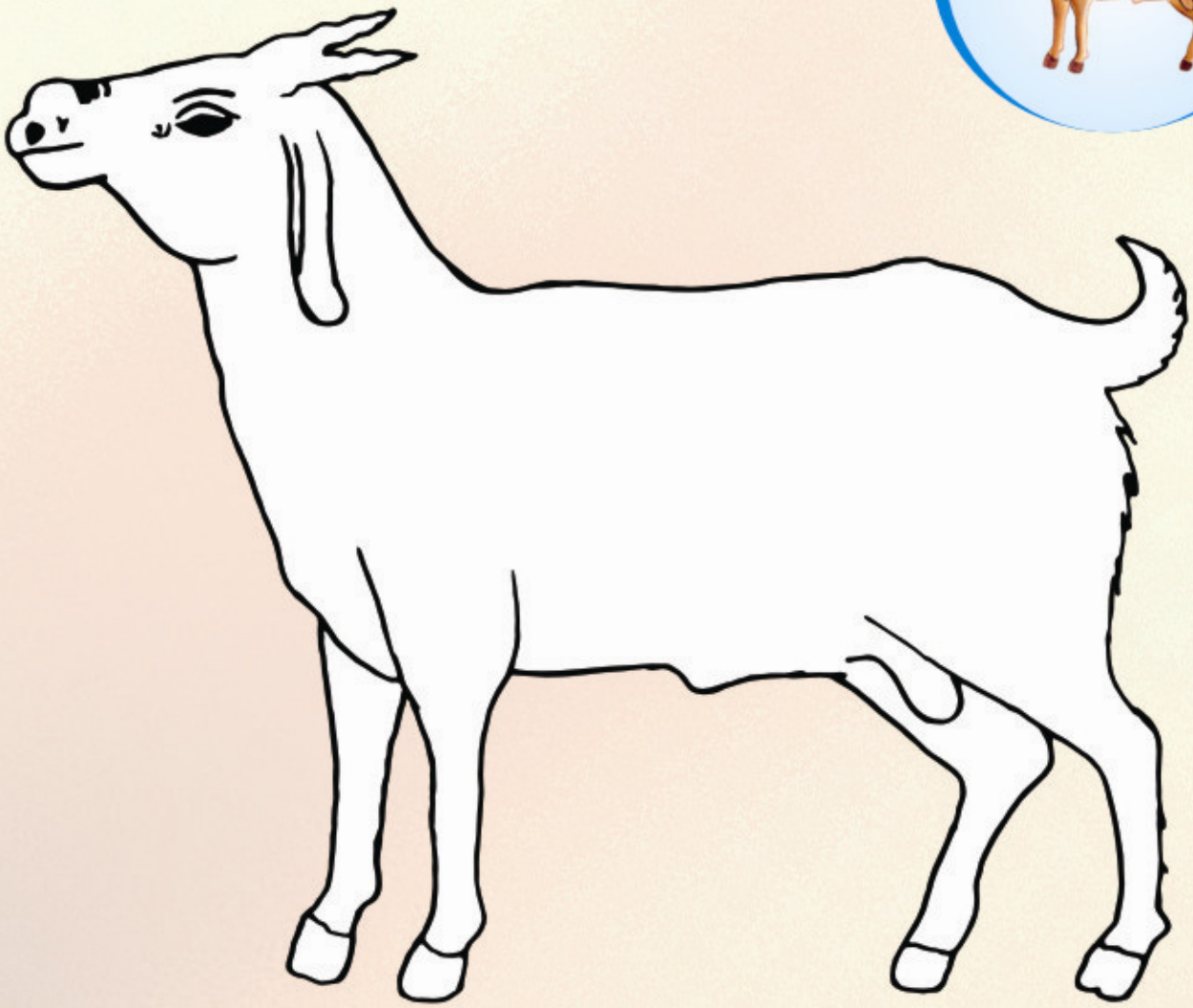

चिह्न - बकरा
रंग - स्वर्ण
ऊँचाई - 35 धनुष
आयु - 95 हजार वर्ष
जन्म - श्री हस्तिनापुरजी
मोक्ष - श्री सम्मेदशिखरजी

दुख का सागर सब जन पाये,
नाव-पोत चाबी ना पाये।
कुन्थुप्रभु का जहाज निराला,
मुझे शरण दो ओ जगपाला॥

॥ ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः॥

मैं बकरा हूँ। मैंने पूर्व जन्म में लोगों से बहुत छल-कपट किया था। जिसके कारण इस भव में तिर्यञ्च बना हूँ। आप कुन्थुनाथ भगवान की शरण में जाकर अज (अमर) बन जाओ।

18

श्री अरनाथ भगवान, आरोन(म. प्र.)

आठ कर्म का नाश किया है, अर स्वामी शिव पास किया है।
हस्तिनापुर जन्म लिया है, सबके मन को मोह लिया है॥

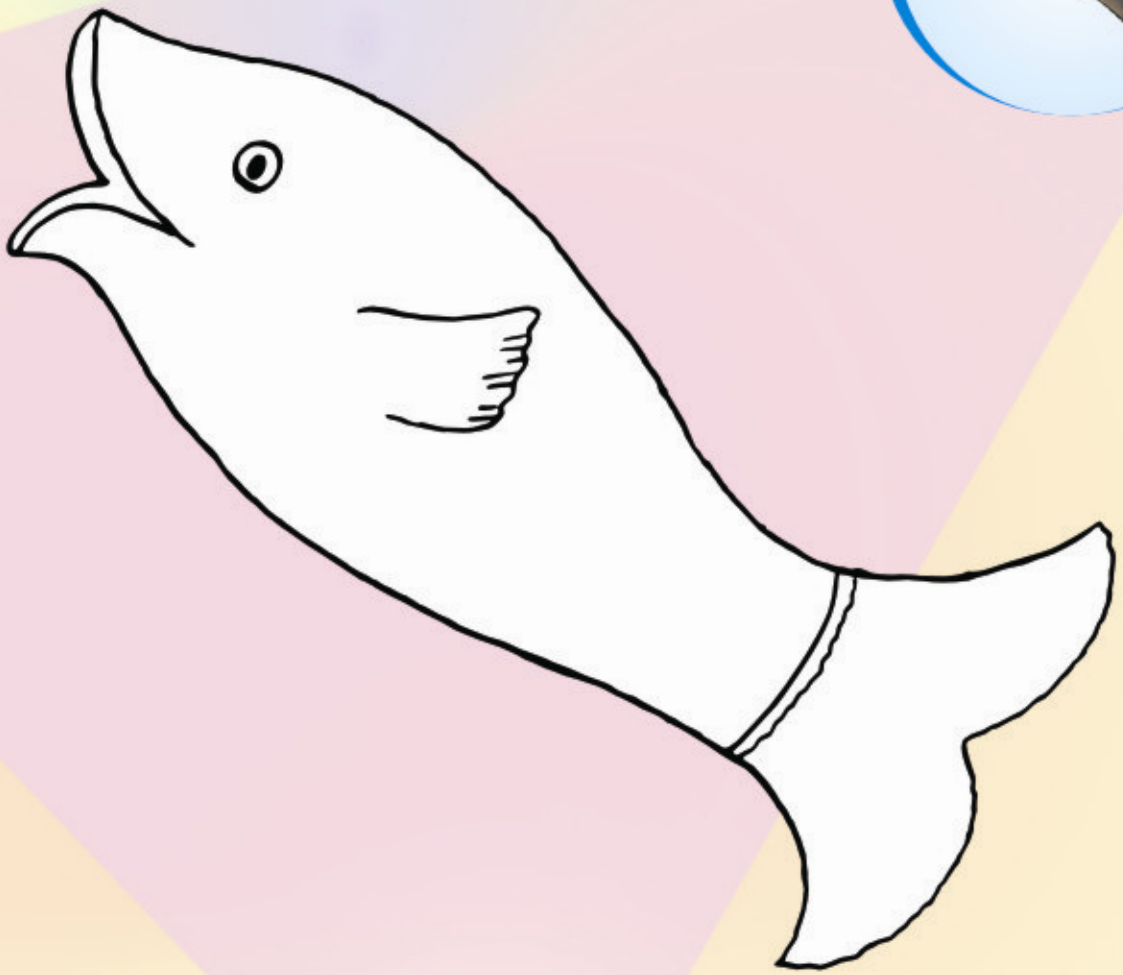

चिह्न	-	मच्छ
रंग	-	स्वर्ण
ऊँचाई	-	30 धनुष
आयु	-	84 हजार वर्ष
जन्म	-	श्री हस्तिनापुरजी
मोक्ष	-	श्री सम्मेदशिखरजी

चक्र आपके वश में सारे,
अरहनाथ का राज्य महा रे।
भ्रमण जाल चतुर्गति मैं करता,
इसे हरो ओ साथी हर्त्ता॥

मैं मछली हूँ। मैं प्रतिकूल लहरों में भी तैरकर अपने लक्ष्य तक पहुँच जाती हूँ। हे प्रज्ञ! हमें भी प्रतिकूलता आने पर अरनाथ भगवान की भक्ति करते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त करो।

॥ ॐ ह्रीं श्री अरनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः ॥

19

श्री मल्लिनाथ भगवान, सिद्धान्त तीर्थ, शिकोहपुर

मोह मल्ल को तुमने मारा, जिससे पाया शिव का द्वारा।
इस बालक को सन्मति देना, भगवन दुर्मति को हर लेना॥

चिह्न - कलश
रंग - स्वर्ण
ऊँचाई - 25 धनुष
आयु - 55 हजार वर्ष
जन्म - श्री मिथिलापुरीजी
मोक्ष - श्री सम्मेदशिखरजी

देखो! देखो! मंदिर प्यारा,
प्रेम दया विश्वास सहारा।
मल्लिनाथ सुखदायक भगवन,
जिनके पूजक बनते भगवन॥

मैं कलश हूँ। पूर्णता का प्रतीक हूँ। मंगल सूचक माना जाता हूँ। हे आत्मन्! मेरे समान यदि पूर्णता को प्राप्त होना चाहते हो तो भगवान मल्लिनाथ की शरण में जाकर मोक्ष रूपी सुखामृत का पूर्ण कलश बनो।

॥ ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः॥

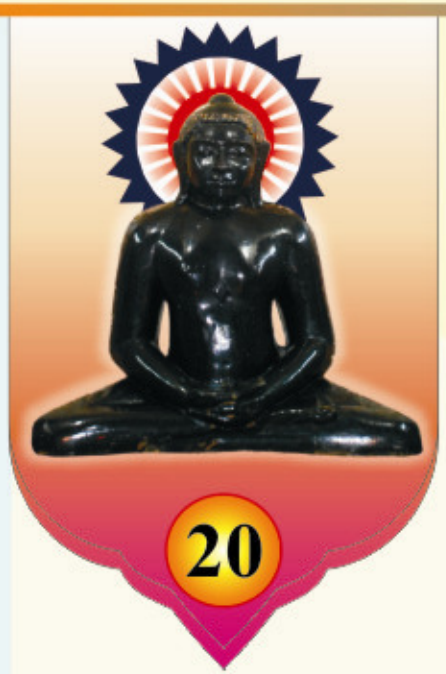

श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान, पैठण (महा.)

चौथे युग की प्रतिमा प्यारी, महिमा गाते सब नर नारी।
अतिशय पैठण में राजित, सबसे मुनिसुव्रत आराधित॥

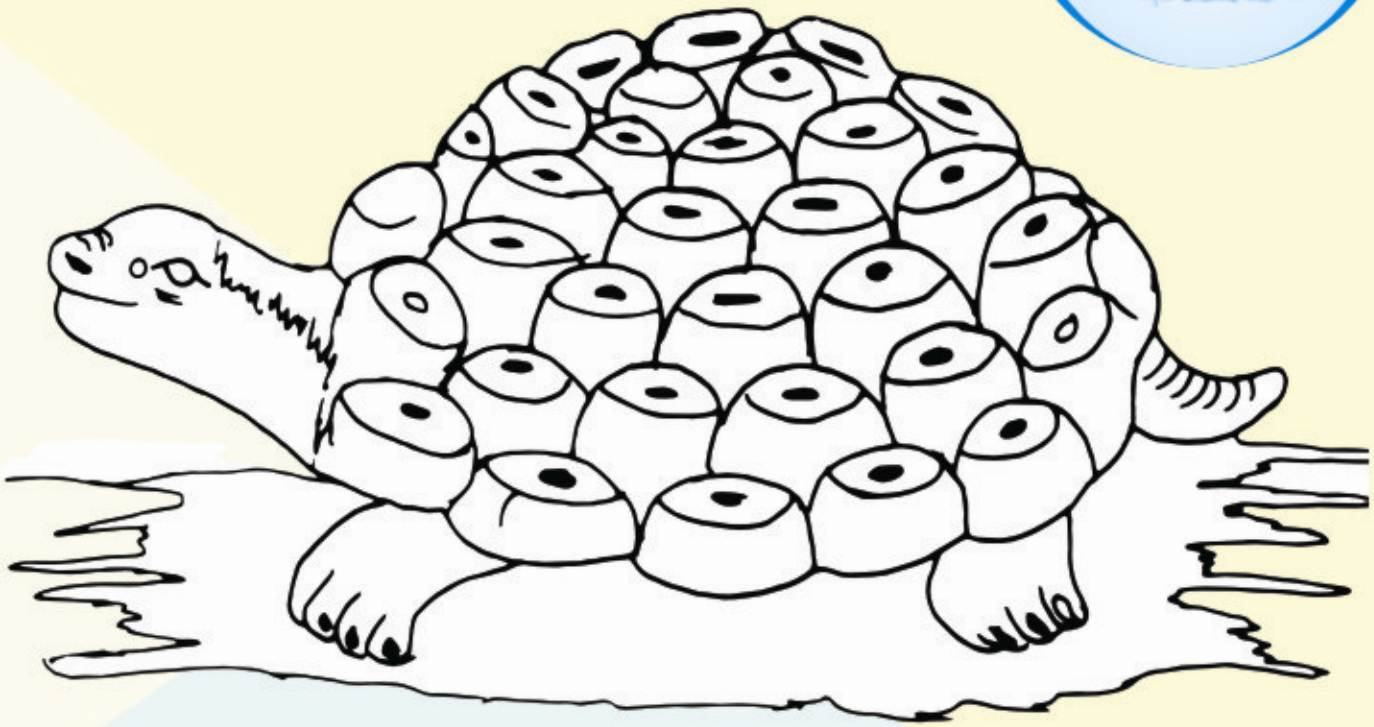

चिह्न - कछुआ
रंग - श्याम
ऊँचाई - 20 धनुष
आयु - 30 हजार वर्ष
जन्म - श्री राजगृहीजी
मोक्ष - श्री सम्मेदशिखरजी

सब जग में अज्ञान भरा है,
चिन्ता का साम्राज्य खरा है।
दो उजयारा मुझे जगाओ,
मुनिसुव्रत प्रभु शक्ति दिलाओ॥

मैं कछुआ हूँ। मैं अपनी सुरक्षा के लिए अपने पैर और शिर को संकुचित कर लेता हूँ उसी प्रकार हे आत्मन्! अपनी आत्म रक्षा के लिए मन और इन्द्रियों को संकुचित करके मुनिसुव्रतनाथ भगवान की शरण प्राप्त करो।

॥ ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः॥

21

श्री नमिनाथ भगवान, चौबीसी बड़ा मंदिर, चंदेरी (म. प्र.)

चौबीसी में नमिस्वामी हो, चंदेरी में तुम नामी हो।
चरणों की रज जो भी पाते, भवसागर से वो तर जाते॥

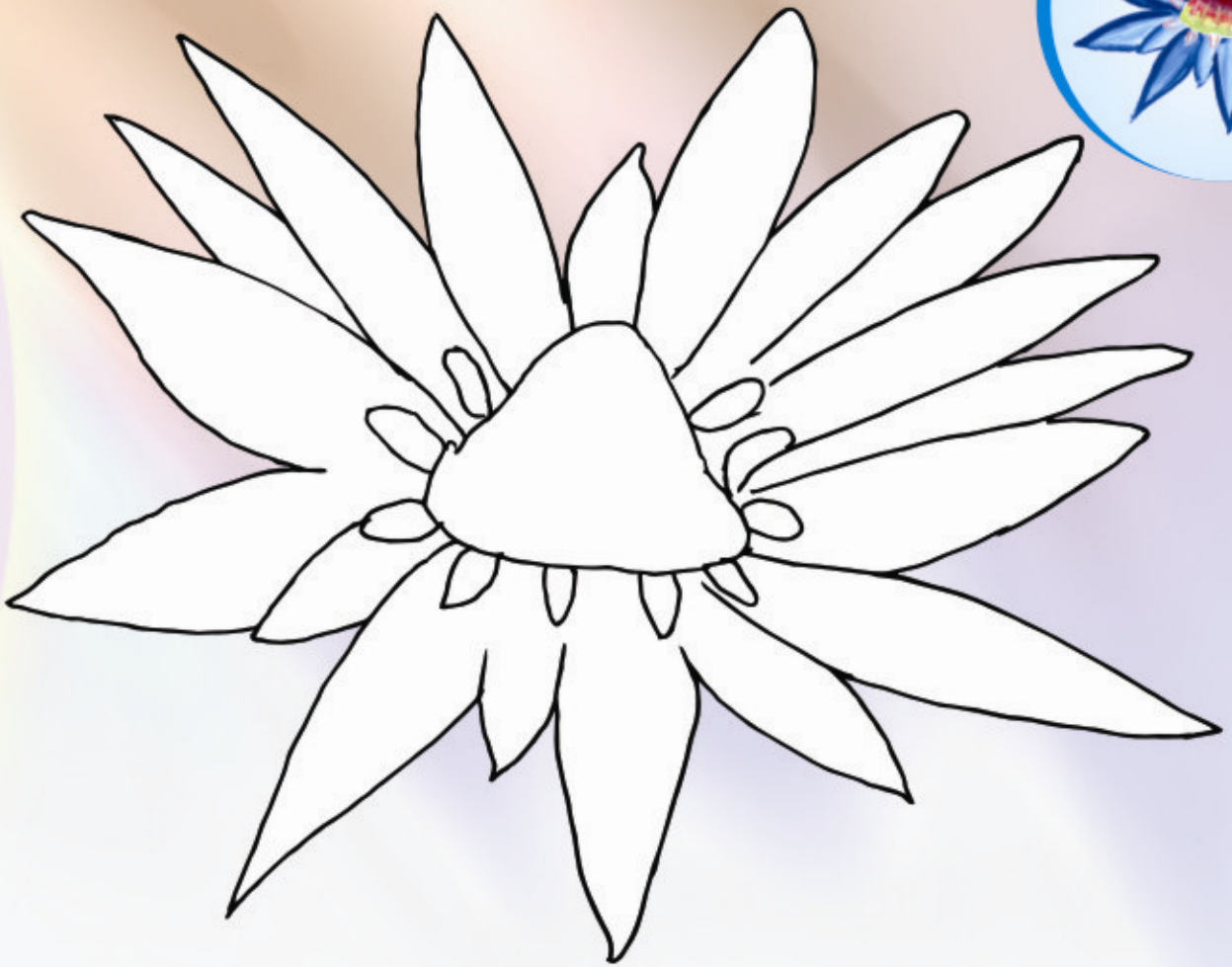

चिह्न	-	नीलकमल
रंग	-	स्वर्ण
ऊँचाई	-	20 धनुष
आयु	-	10 हजार वर्ष
जन्म	-	श्री मिथिलापुरीजी
मोक्ष	-	श्री सम्मेदशिखरजी

धन्य!धन्य! जब करते वन्दन,
सूर्य रहे नमिनाथ किरण हम।
जल बिन मछली रहती जैसे,
जिये आप बिन अब हम कैसे?॥

॥ ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः॥

मैं नीलकमल हूँ। जिस प्रकार मैं सरोवर में रहते हुए भी सदा उससे ऊपर रहता हूँ। उसी प्रकार हे भव्य प्राणी ! आप भी संसार में रहते हुए संसार से अलग रहो और भगवान नमिनाथ के चरणों में सदैव अपना मस्तक रखो।

22

श्री नेमिनाथ भगवान, शौरीपुर (उ. प्र.)

शौरीपुर में जन्म सुपाया, गिरनारी मोक्ष मनाया।
चरणों की रज जो भी पाते, भवसागर से वे तिर जाते॥

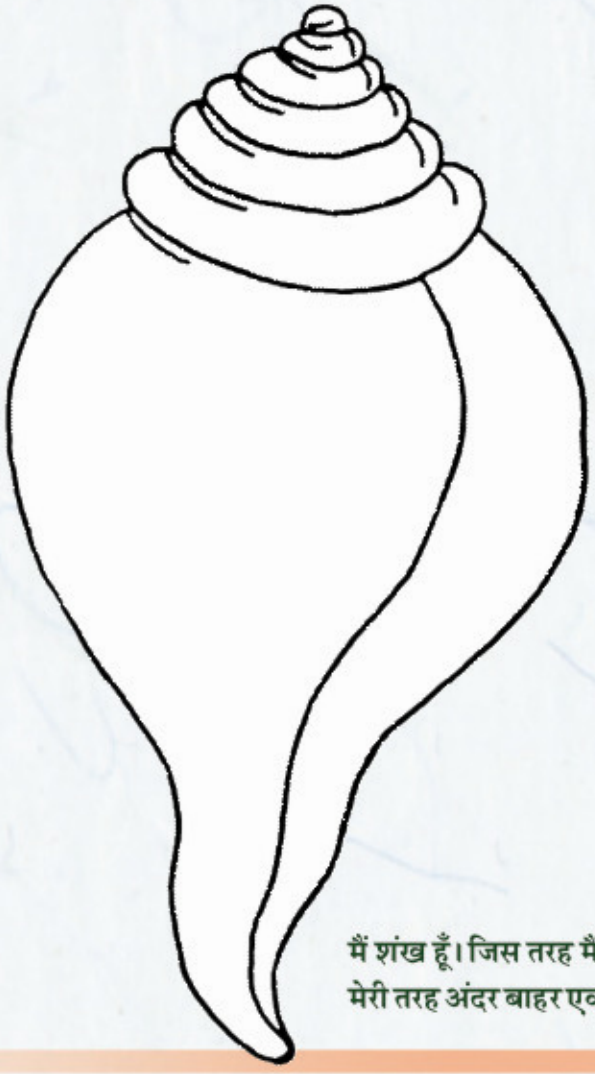

चिह्न - शंख
रंग - श्याम
ऊँचाई - 10 धनुष
आयु - 1 हजार वर्ष
जन्म - श्री शौरीपुरजी
मोक्ष - श्री गिरनारजी

विफल रहा व्यापार हमारा,
गरीब रोगी मैं बेकारा।
नेमिनाथ पाये आतम धन,
क्योंकि दया दे स्वस्थ देहधन॥

मैं शंख हूँ। जिस तरह मैं अंदर हूँ उसी तरह बाहर भी हूँ। इसलिए हे मानव!
मेरी तरह अंदर बाहर एक से होकर शुद्धत्व की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करो।

॥ ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः॥

23

श्री पार्श्वनाथ भगवान, बिजौलिया (राज.)

बिजौलिया में पारस आये, ज्ञान कल्याणक यहीं मनाये।
विंध्यावलि यह धाम हुआ है, मनवांछित सब काम हुआ है॥

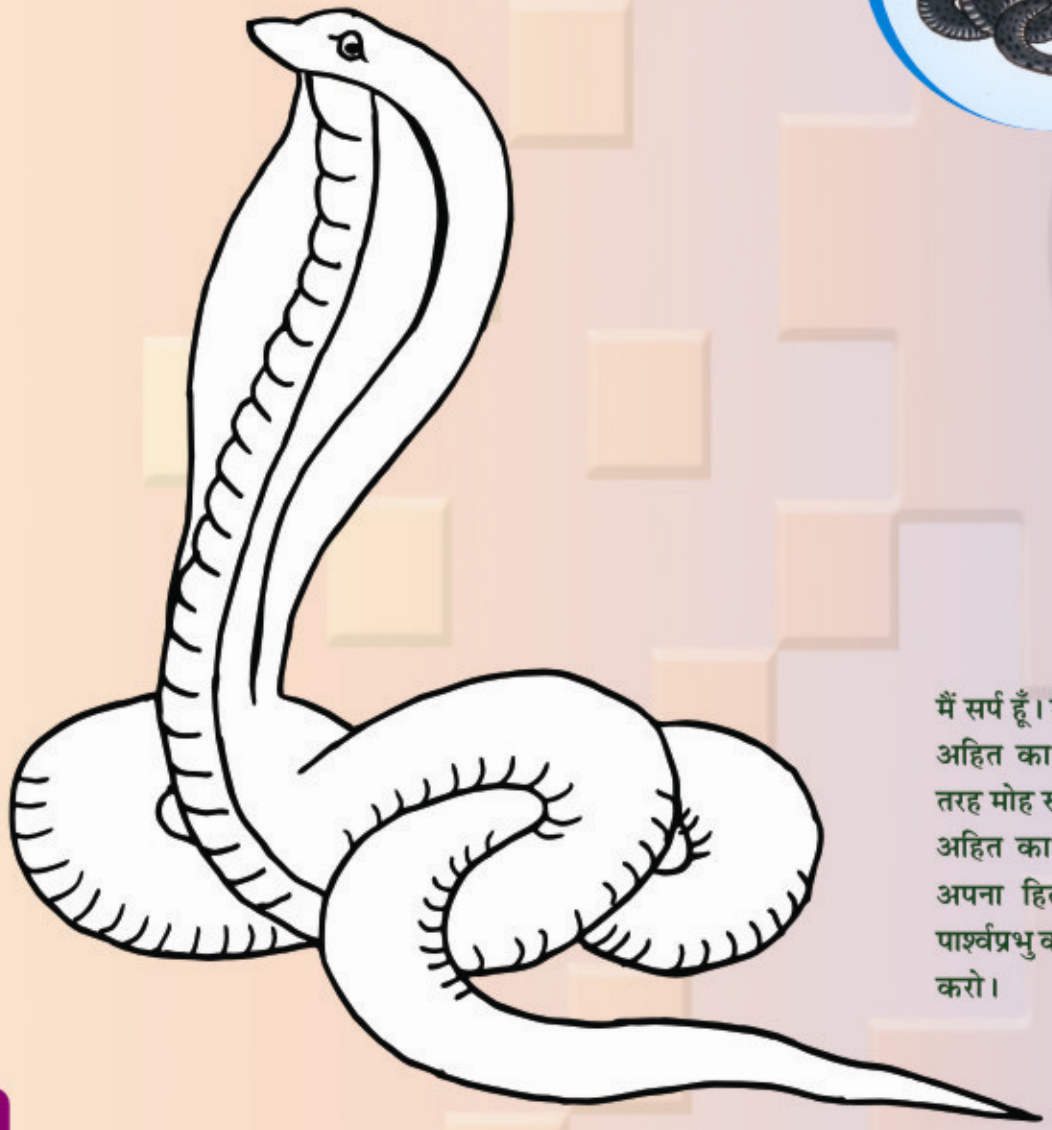

चिह्न - सर्प
रंग - नील
ऊँचाई - 9 हाथ
आयु - 100 वर्ष
जन्म - श्री वाराणसीजी
मोक्ष - श्री सम्मेदशिखरजी

पार्श्वनाथ जी उच्च खिलाड़ी,
जो जीते सब खेल यहाँ ही।
विजयी! दाता! शक्तिराज ओ,
बल साहस दो, आत्म विजय को॥

मैं सर्प हूँ। मेरा विष जीव के अहित का कारण है, उसी तरह मोह रूपी विष जीव के अहित का कारण है। यदि अपना हित चाहते हो तो पार्श्वप्रभु की शरण को प्राप्त करो।

॥ ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः ॥

24

श्री महावीर भगवान, श्री महावीरजी (राज.)

अंतिम शासन नायक प्रभुवर, महावीर अतिवीर जिनेश्वर।
महावीरा जी क्षेत्र कहाया, शिव जाने का मार्ग बताया॥

चिह्न - सिंह
रंग - स्वर्ण
ऊँचाई - 7 हाथ
आयु - 72 वर्ष
जन्म - श्री कुण्डलपुरजी
मोक्ष - श्री पावापुरजी

महावीर सच महावीर हो,
जग के नेता महावीर ओ।
मुक्ति रमा का देखूँ सपना,
पूर्ण करोगे क्या शुभ सपना॥

मैं सिंह हूँ। बलवान हूँ। मैं जंगल का राजा हूँ। हमेशा स्वाधीन रहता हूँ। आप भी भगवान महावीर स्वामी की शरण पाकर सिंह वृत्ति का पालन करते हुए स्वाधीन बनने का प्रयत्न करो।

॥ ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमो नमः॥